शोध मंथन Vol. XIII No.III July-Sept. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिकाः एक समाजशास्त्रीय विचार–विमर्श

प्राप्तिः 06.09.2022
स्वीकृतः 17.09.2022

72

डॉ० विपिन कुमार
समाजशास्त्र विभाग
कॉलिज ऑफ एजुकेशन
बिलासपुर (गौतमबुद्धनगर)
ईमेलः *vipinchauhan0097@gmail.com*

डॉ० सत्येन्द्र सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
जनता वैदिक कॉलिज
बड़ौत (बागपत)
ईमेलः *satyendra.jvc@gmail.com*

सारांश

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। संसार की प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन जड़ और चेतन सभी में दृष्टिगोचर होता है। प्रकृति में यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। कभी दिन तो कभी रात, कभी सर्दी, कभी गर्मी तो कभी वर्षा, कभी बाढ़ तो कभी सूखा, कभी भूकम्प तो कभी तूफान। बीज का भूमि में पोषण होने से अंकुरण होता है, पौधा बनता है, पौधे से वृक्ष और पूर्णता के पश्चात् उसका अन्त। प्रकृति में इस परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। जब जड़ प्रकृति में परिवर्तन होता है तो मनुष्य तो चेतन है। उसमें, उसके द्वारा निर्मित समाज में, उसकी व्यवस्था में, उसके क्रिया–कलाप में भला परिवर्तन कैसे नहीं होगा? मनुष्य का जीवन एक स्तर से दूसरे स्तर तक परिवर्तित होता रहता है– पहले बचपन, फिर युवावस्था, फिर वृद्धावस्था और अन्त में मृत्यु। मनुष्य की भाषा, विचार, आवश्यकताएँ, जीवन, उद्देश्य, मूल्य, संस्कृति और सभी किसी न किसी रूप में बदलती रहती है। कहा जाता है कि समय और संसार स्थिर नहीं रहते। परिवर्तन जीवन का नियम है। वे, जो केवल अपने अतीत एवं वर्तमान को ही देखते रहते हैं, निश्चित रूप से अपने भविष्य को खो देते हैं। समाज मानव जीवन के प्रारम्भ से ही मनुष्य के साथ और तब से लेकर आज तक समाज या सामाजिक जीवन में, उसके स्वरूप, संरचना, व्यवस्था, संगठन, आदर्श, मूल्य सभी में परिवर्तन की निरन्तर और अवश्यभावी प्रक्रिया में कभी भी अवरोध नहीं आया। किसी भी ऐसे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती, जो पूर्णतः स्थिर हो। परिवर्तन तो प्रत्येक समाज में होगा ही। अपरिवर्तनशील समाज का अस्तित्व तो हो ही नहीं सकता। इस परिवर्तन का ही परिणाम है कि पाषाण युग का वह आदिमानव आज अन्तरिक्ष तक पहुँच गया है और भविष्य में पता नहीं कहाँ तक पहुँचेगा। अतः समाज के सन्दर्भ में होने वाले परिवर्तन को हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।

समाज निरन्तर गतिशील रहता है। समाज की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तनशीलता का ही परिणाम है कि आज हमारे समाज की रचना और स्वरूप में भारी परिवर्तन आ गया है। आज का समाज आज से

एक सौ वर्ष पूर्व के समाज से या एक हजार वर्ष पूर्व के समाज से बहुत भिन्न है। इस अन्तराल में जो परिवर्तन हुए है उसमें आज के समाज और उस समय के समाज में जमीन–आसमान का अन्तर आ गया है। इस प्रकार समाज में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। हाँ यह बात अवश्य है कि किसी समाज में परिवर्तन बहुत तीव्र गति से होते हैं और किसी समाज में बहुत मन्द गति से। समाज की विशेषता यह भी है कि सामान्यतः वह आगे की ओर ही बढ़ता है। इसमें हुआ परिवर्तन प्रगति का ही सूचक होता है।

सामाजिक परिवर्तन दो शब्दों से मिलकर बना है। समाज और परिवर्तन, समाज का अर्थ केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं है समूह में रहने वाले व्यक्तियों के आपस में जो सम्बन्ध है, उन सम्बन्धों के संगठित रूप को ही समाज कहते हैं। समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। परिवर्तन का अर्थ है– बदलाव अर्थात् पहले की स्थिति में बदलाव। इस प्रकार समाज की पहले की स्थिति और बाद की स्थिति में अन्तर आ जाना ही सामाजिक परिवर्तन है। सामाजिक संगठन, सामाजिक ढाँचे, सामाजिक सम्बन्धों या समाज के रहन–सहन के ढ़ंग, रीति–रिवाजों, मूल्यों और विश्वासों आदि में जो अन्तर आ जाता है, वह सामाजिक परिवर्तन कहलाता है।

यह समाज की एक सहज, वास्तविक एवं आवश्यक क्रिया है। 'लूम्ले' के कथनानुसार, समाज में कई कारणों से परिवर्तन होते रहते हैं और होते रहेंगे। परिवर्तन ही समाज के जीवित होने का प्रमाण है। बिना परिवर्तन के समाज का विकास कठिन है। हमारी आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति, सामाजिक परितर्वन का ही प्रतिफल है। समाज में शिक्षा व्यवस्था का प्रादुर्भाव भी सामाजिक परिवर्तनों की देन है।

सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे अधिक शक्तिशाली यन्त्र है। शिक्षा द्वारा ही समाज में वास्तविक परिवर्तन होता है और वह आधुनिक बनता है।

शिक्षा और समाज में अटूट सम्बन्ध है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया समझी जाती है? समाज यह निश्चित करता है कि उसके सदस्यों को दी जाने वाली शिक्षा का स्वरूप कैसा हो। समाज के स्वरूप बदलने पर शिक्षा का स्वरूप बदलता है और शिक्षा के कारण सामाजिक परिवर्तन होता है। यदि हम सामाजिक परिवर्तन को केवल एक सामाजिक उद्विकास न मानकर उसे एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया अथवा एक नियोजित सामाजिक शक्ति कहें तो हमें शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक अत्यनत महत्वपूर्ण कारक मानना होगा। इसलिए यह अपेक्षित है कि हम शिक्षा के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करें।

शिक्षा के कार्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा सामाजिक परितर्वन का एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा के सामाजिक प्रगति सम्बन्धी अनेक कार्य हैं। इन कार्यों के द्वारा शिक्षा ने सामाजिक परिवर्तन किये हैं। ये कार्य निम्नलिखित हैं–

1. संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुँचाना

सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि में शिक्षा का अत्यनत महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा द्वारा पुरानी पीढ़ी की संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुँचाना है। यह सांस्कृतिक स्थानान्तरण की क्रिया समाज को स्थायित्व प्रदान करती है। दूसरे शब्दों में शिक्षा समाज में स्थायित्व एवं निरन्तरता लाती है। सामाजिक स्थायित्व के उपरान्त शिक्षा का कार्य समाप्त नहीं होता है। वह और आगे बढ़ती है और

समाज को, अपनी में वांछनीय परिवर्तन अथवा सुधार लाने में सहायता देती है। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की जन्मदाता, प्रवर्तक एवं निर्देशक है।

2. आवश्यक मूल्यों को स्थायी करना

प्रत्येक समाज के कुछ स्थायी अथवा शाश्वत् मूल्य होते हैं। इन्हीं मूल्यों के बल पर समाज स्थायित्व प्राप्त करता है। जब किसी सामाजिक परिवर्तन के द्वारा इन स्थायी मूल्यों में कुछ दुर्बलता आ जाती है और सामाजिक संगठन विघटित होने लगता है तब ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा उन मूल्यों की रक्षा करती है और आने वाली पीढ़ी के लोगों को उनका ज्ञान कराती है। शिक्षा व्यक्तियों को इस प्रकार तैयार करती है कि वे स्थायी मूल्यों में विश्वास रखते हुए सामाजिक परिवर्तन स्वीकार कर सकें।

3. परिवर्तन ग्रहण कराने में सहायता देना

समाज में नये–नये परिवर्तन होते रहते हैं। समाज में कुछ व्यक्ति इन परिवर्तनों को अपना लेते हैं और कुछ नहीं अपनाते। शिक्षा का कार्य है कि वह वांछित परिवर्तनों के ग्रहण कराने में सहायक हों। शिक्षा नवीन विचारों एवं धारणाओं के प्रचार एंव प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है। जब कभी भी भौतिक अथवा अभौतिक परिवर्तन होता है तो शिक्षा इन परिवर्तनों के प्रचार एवं प्रसार द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाती है। इन परिवर्तनों को समाज में ग्रहण कराने हेतु व्यक्तियों को मानसिक रूप से तैयार करती है तथा उचित एवं आवश्यक वातावरण का निर्माण करती है।

4. नवीन परिवर्तनों के सम्बन्ध में सहायक

शिक्षक वर्ग ही समाज की बुराइयों को दूर करने का और सामाजिक सुधारों का प्रस्ताव करते हैं। सुधारों को लाने के लिए नये–नये सामाजिक परिवर्तनों के अभियान बनाते हैं। शिक्षा के कारण कई समाज सुधार आन्दोलन भारतवर्ष में चले जिन्होंने नये एवं महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों को जन्म दिया।

5. सामाजिक परिवर्तनों की शिक्षा

जनता को सामाजिक परिवर्तनों का ज्ञान देने के हेतु शिक्षा व अन्य शिक्षा के साधनों का उपयोग करते हैं। आवश्यक सामाजिक परिवर्तनों का ज्ञान हो जाने पर जनता ही सामाजिक परिवर्तनों की योजनाओं में सहयोग देती है। प्रत्येक देश में सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा–व्यवस्था का महत्वपूर्ण योग रहा है।

6. परिवर्तन के विरोध को दूर करना

समाज में जहाँ कुछ कारक ऐसे होते हैं, जो सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्रिय होते हैं, वहाँ कुछ कारक ऐसे भी होते हैं जो परिवर्तन में बाधक होते हैं। शिक्षा परिवर्तनो के महत्व को स्पष्ट करके एवं उनका प्रसार करके उनके विरोधी कारकों को दूर करती है।

7. ज्ञान के क्षेत्रों में विकास

शिक्षा द्वारा व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में बिखरे ज्ञान को प्राप्त करता है और फिर ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में नये–नये अनुसंधान करता है। नई–नई बातों की खोज करके पहले भौतिक संस्कृति में और बाद में अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन लाता है। इस प्रकार शिक्षा ज्ञान के विकास द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायक होती है।

8. सामाजिक परिवर्तन का नेतृत्व

एक प्रजातन्त्रीय समाज में शिक्षा के सामाजिक परिवर्तन सम्बन्धी कार्य और भी अधिक महत्व के हैं। शिक्षा व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह समाज में एक उत्तम जीवन व्यतीत करे। यह तभी सम्भव हो सकता है, जबकि उसमें समाज के अन्दर फैली हुई कुरीतियों को दूर करने की ओर समाज में आवश्यक एवं प्रगतिशील परिवर्तन लाने की शक्ति विद्यमान हो।

शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन का अनुगमन

यह स्पष्ट है कि शिक्षा परिवर्तन लाती है, परन्तु यह बात भी सत्य है कि सामाजिक परिवर्तन शिक्षा को प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में शैक्षिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन के अनुगामी होते हैं। जब प्रविधियाँ और मूल्य परिवर्तित होते हैं और नई सामाजिक आवश्यकताओं को जन्म देते हैं तब शिक्षा समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप अपने को व्यवस्थित करती है। ऐसे अवसर पर समाज अथवा राष्ट्र की नई चुनौतियों के मुकाबले हेतु शिक्षा की नीति निर्धारित करता है और शिक्षा की प्रक्रिया में परिवर्तन करता है–

1. सामाजिक आवश्यकताओं के कारण शिक्षा परिवर्तन

नवभारत में धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना समाजवादी समाज की स्थापना, औद्योगिकरण, नगरीकरण, जन शिक्षा की माँग के कारण शिक्षा में आवश्यक परिवर्तन लाने का प्रयास हो रहा है। निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा, व्यस्कों की शिक्षा, उच्च एवं माध्यमिक शिक्षा का पुनर्गठन, कृषि एवं उद्योगों के विकास के हेतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा, स्त्रियों और पिछड़े हुए वर्गों के लिए विशेष शैक्षिक सुविधाएँ आदि शिक्षा के स्वरूप में आये हुए परिवर्तनों के उदाहरण हैं। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक परिवर्तनों की अनुगामी है।

2. सांस्कृतिक अनुकूलन द्वारा शैक्षिक परिवर्तन

परिवर्तन पहले भौतिक संस्कृति में होता है और फिर अभौतिक संस्कृति में। भौतिक संस्कृति का अनुकरण करने पर शिक्षा में परिवर्तन होता है। ओटावे के कथनानुसार, 'सांस्कृतिक अनुकरण के कारण शिक्षा परिवर्तन होता है।' उदाहरणतः रेडियो का आविष्कार भौतिक संस्कृति का एक परिवर्तन है। इसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय नवीन ज्ञान मिलता है। पाठ्यक्रम निर्माण सम्बन्धी सिद्धान्तों में परिवर्तन हुआ है, शिक्षा की नवीनतम विधियों का प्रतिपादन हुआ है, तकनीकी शिक्षा की माँग बढ़ी है, तकनीकी विद्यालय खोले गये हैं। रेड़ियों के लिए कुशल कारीगरों की माँग बढ़ती है। रेडियो से सम्बन्धित विज्ञान शिक्षा का अंग बनाया गया है, इत्यादि। इस प्रकार सांस्कृतिक परिवर्तन से शिक्षा में परिवर्तन हुआ है।

3. सामाजिक शक्तियों द्वारा शिक्षा परिवर्तन

समाज की कुछ शक्तियाँ होती हैं, जैसे– समाज के समूह, समाज के मूल्य तथा समाज की आवश्यकतायें एवं आकांक्षायें। ओटावे के कथनानुसार, इन शक्तियों द्वारा शिक्षा–व्यवस्था निर्धारित की जाती है। स्पष्ट है कि इन शक्तियों के अनुसार शिक्षा में परिवर्तन होता है, किन्तु आज सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में शिक्षा का कार्य सन्तोषजनक नहीं है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन लाने में असमर्थ है। समाज में होने वाले परिवर्तन के समकक्ष शिक्षा में परिवर्तन नहीं हो रहा है। इसलिए शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के पीछे–पीछे चलती है।

शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। चूँकि शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है, इसलिए वह समाज में होने वाले परिवर्तन को स्वीकार करती हुयी आगे बढ़ती है और बदलते हुए समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यक्ति की सहायता करती है।

शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तनों के सम्बन्धों को संक्षेपीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

1. शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक परिवर्तनों के लिए तैयार करती है। यह आवश्यकताओं के रूप में परिवर्तन लाती है और वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में विफलता की भावना उत्पन्न करती है।
2. शिक्षा सामाजिक परिवर्तनों को प्रारम्भ करती है और उनको एक दिन तथा प्रयोजन प्रदान करती है।
3. शिक्षा समाज सुधारकों एवं नेताओं का सृजन करती है, जो चेतन रूप से सब प्रयास सामाजिक परिवर्तनों के लाने के लिए करते हैं।
4. शिक्षा ऐसे सामाजिक परिवर्तनों की प्रकृति का निर्धारण करती है, जिनको लाना आवश्यक है।

शिक्षा के विकास में सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा में परिवर्तन एवं विकास से भी सामाजिक परिवर्तन होता है। शिक्षा का परिवर्तन समाज में समस्याओं को उत्पन्न करता है। इन समस्याओं का समाजशास्त्री ही अध्ययन करता है और समस्याओं की जानकारी शिक्षाशास्त्री को देता है। शिक्षाशास्त्री इन समस्याओं का समाधान समाज को प्रदान करता है। शिक्षा के समाधान से नवीन समस्यायें उत्पन्न होती है, इस प्रकार यह क्रम निरन्तर चलता रहता है।

शिक्षा के विकास से सामाजिक परिवर्तन के कुछ उदाहरणों को दिया गया है–

1. भारत में स्वतन्त्रता के बाद सभी बालकों तथा बालिकाओं की शिक्षा का प्रावधान किया गया। शिक्षा में सभी को समान अवसर प्रदान करने की सुविधायें उपलब्ध कराने का आयोजन किया गया। शिक्षा के इस प्रकार के आयोजन से सभी जातियों के बालक शिक्षा ग्रहण करने लगे और अपने पैतृक व्यवसाय को छोड़कर अन्य सरकारी नौकरियाँ की जाने लगी। इसका समाज की व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव हुआ, क्योंकि आने वाली पीढ़ी अपने पैतष्क व्यवसाय को छोड़ने लगी। जातियों के नाम व्यवसाय से जुड़े हुए हैं जैसे नाई, धोबी, बढ़ई, लुहार, दर्जी आदि। समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति जातियों के व्यवसाय से पूरी होती थी। शिक्षा के इस प्रकार के विकास से समाज में समस्यायें उत्पन्न होने लगी। समाजशास्त्रियों ने इस प्रकार की समस्याओं का शिक्षाशास्त्रियों के समक्ष रखा। इस समस्या के समाधान हेतु शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा के उद्देश्यों में व्यवसाय को शिक्षा की ओर जोड़ दिया गया तथा विभिन्न पत्रकार के व्यवसायिक पाठ्यक्रमों को संचालित किया गया।
2. सभी को शिक्षा की सुविधा से बालक एवं बालिकाओं की भी शिक्षा होने लगी तथा दोनों ही नौकरियों में जाने लगे। इस प्रकार की प्रवृत्ति एवं परम्पराओं से बच्चों के समाजीकरण की समस्या और उनके देखभाल की समस्या उत्पन्न होने लगी। समाजशास्त्रियों ने इस

प्रकार की समस्या को शिक्षाशास्त्रियों के समक्ष प्रस्तुत किया। इस समस्या के समाधान हेतु शिक्षा के क्षेत्र में आँगनवाड़ी तथा बालवाड़ी संस्थाओं की स्थापना की गई, जिसमें 2–6 वर्ष के आयु के बालकों के लिए पूर्व प्राथमिक कक्षाओं की व्यवस्था की गई है। पूर्व माध्यमिक शिक्षा में बच्चों के विकास–क्रम को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों का विकास हुआ।

3. विद्यालयों में सभी बालकों की एक–सी यूनीफोर्म के अनिवार्य करने से छात्रों में छुआ–छूत का भेदभाव भी समाप्त हो गया और छुआ–छूत की समस्या के समाधान के लिए अब विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था की गई, जिसमें सभी छात्र मिलकर भोजन करते हैं।

अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि परिवर्तन तो प्रकृति का शाश्वत नियम है परन्तु शिक्षा के बिना परिवर्तन का कोई औचित्य ही नहीं है। क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही सामाजिक परिवर्तन का ज्ञान होता है और समाज इसे पूर्ण रूप से स्वीकार करता है। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

सन्दर्भ

1. शर्मा, आर0ए0. (2010). ''शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार''. गणपति प्रिन्टर्सः चित्रकुट कॉलोनी. मेरठ. पृष्ठ **34.**
2. लाल, रमन बिहारी., पलोड़. (2006–07). ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग''. राज प्रिन्टर्सः 103/2 जयदेवी नगर. गढ़ रोड. मेरठ. पृष्ठ **96.**
3. पचौरी, गिरिश., पचौरी, रितु. (2014). ''उभरते भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका''. राधिका कम्प्यूटर्सः जागृति विहार. मेरठ. पृष्ठ **27.**
4. गुप्ता, एम0एल0., शर्मा, डी0डी0. (2004). ''समाजशास्त्र''. साहित्य भवन पब्लिकेशनः आगरा. पृष्ठ **7–9.**
5. तिवारी, प्रमोद. (2007). ''समाजशास्त्र क्या है''. ज्ञान भारती पब्लिशर्सः इलाहाबाद. पृष्ठ **103.**
6. नागर, एस0एम0., महाजन, संजीव. (2005–06). ''समाजशास्त्र का परिचय''. रस्तोगी प्रिन्टर्सः मेरठ. पृष्ठ **79–82.**
7. पाण्डे, रामशक्ल. (2008). ''शैक्षिक निबन्ध''. विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2. पृष्ठ **1–5.**
8. सक्सैना, एन0आर0. (2009). ''अध्यापक शिक्षा''. विनय रखेजा. आर0लाल0 बुक डिपोः मेरठ. पृष्ठ **52–55.**
9. लाल, रमन बिहारी., कृष्णकान्त. (2014). 'भारतीय शिक्षा का इतिहासः विकास एवं समस्यायें''. विनय रखेजा. आर0लाल बुक डिपोः मेरठ. पृष्ठ **92–96.**